सब पानी के अंश हैं...

जय चक्रवर्ती
राजभाषा अधिकारी
आई.टी.आई.लि., रायबरेली ।

पानी तेरा दास जग, तू ही जग की आस ।
सब में तेरा वास है, सब में तेरी प्यास ।।

जड़-चेतन, जीवन-जगत, सृजन और विध्वंश ।
सब पानी के अंश हैं, सब पानी के वंश।।

पानी है तो प्राण हैं, पानी है तो देह ।
पानी है तो आँख में, जिन्दा जग का नेह ।।

पड़े न वृक्षों पर कभी, बुरी किसी की दृष्टि ।
वृक्षों से जल, और है जल से सारी सृष्टि ।।

ताल, नदी, नाले, कुएँ, पोखर, झरने, झील ।
मानव की नादानियाँ , रहीं सभी को लील ।।

पानी का हर रूप है, जीवन का पर्याय ।
आँसू, खुशियाँ , वेदना, सब इसके अध्याय ।।

बचे रहें संवेदना के जग में कुछ बीज ।
रखो बचाकर इसलिये, पानी जैसी चीज ।।

धरती जैसा हो सदा, सब पानी के अंश हैं...
साथ-साथ सब रह सकें, नदियाँ , झरने , ताल ।।